B.A. Semester – II
MicroEconomics – II

Unit – I Costs and Revenue

द्वारा - Dr. Manas Mani Tiwari

1- किसी फर्म द्वारा उत्पादन में किये गये कुल मुद्रा व्यय को मुद्रा लागत कहते हैं। मुद्रा लागत दो प्रकार की होती है — (i) स्पष्ट लागतें (ii) अस्पष्ट लागतें

2- स्पष्ट लागतें (Explicit Costs) वे लागतें है जो उत्पादक द्वारा उत्पत्ति के अनेक साधनों को एकत्रित करने में प्रत्यक्ष रूप से व्यय की जाती है जैसे - कच्चे माल पर व्यय, मजदूरी, भूमि व भवन का किराया, विज्ञापन व्यय, बीमा व्यय, घिसावट व टूट-फूट सम्बन्धी व्यय, उधार ली गई पूंजी पर ब्याज भुगतान आदि।

3- अस्पष्ट लागतें या सन्निहित लागतें (Implicit Cost) में उत्पादक की वे व्यय सम्मिलित है जिनका उत्पादक को प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नहीं करना पड़ता जैसे- उत्पादक द्वारा स्वयं दी गई सेवा की मजदूरी, स्वयं की पूँजी पर ब्याज, उत्पादन में प्रयुक्त स्वयं की बिल्डिंग का किराया।

4- कुल मौद्रिक लागत = कुल स्पष्ट लागत + सन्निहित लागत + सामान्य लाभ
Total Production Cost = Total Explicit Cost + Implicit Cost + Normal Profit

5- "किसी वस्तु की अवसर लागत वह सर्वश्रेष्ठ विकल्प है, जिसका उत्पादन उन्हीं उत्पत्ति साधनों द्वारा उसी लागत पर उस वस्तु के विकल्प के रूप में किया जा सकता है।" — प्रो० बेन्हम

6- स्थिर लागतों को पूरक लागत (Supplementary Cost) तथा परिवर्तनशील लागतों को प्रमुख लागत (Prime Cost) भी कहा जाता है।

7- अल्पकाल में —
(i) $TVC = f(q)$
(ii) $TC = TVC + TFC$
(iii) $AC = AVC + AFC$ or $\frac{TC}{q}$
(iv) $MC = \frac{\Delta TC}{\Delta Q}$

$$MC_n = TC_n - TC_{n-1}$$

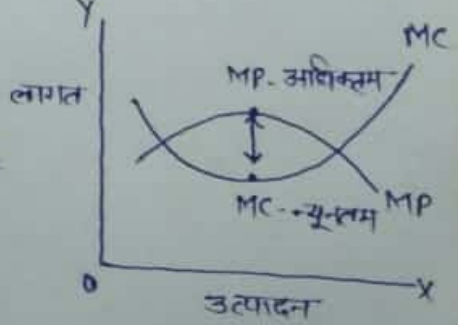

8. $TC = FC + VC$

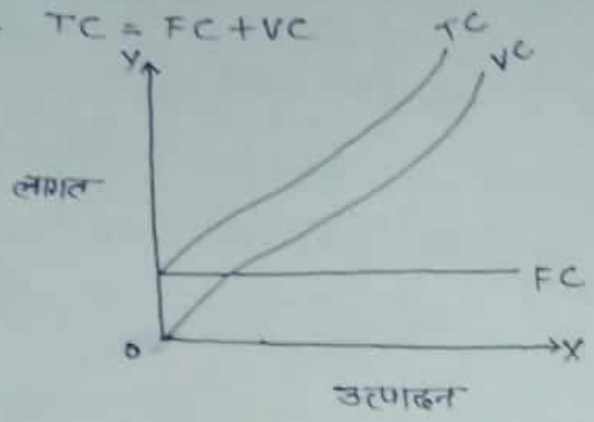

9. AC तथा MC का सम्बंध -

(i). जब AC > MC तब AC गिरती है।

(ii). जब AC = MC तब AC स्थिर है।

(iii). जब AC < MC तब AC बढ़ती है।

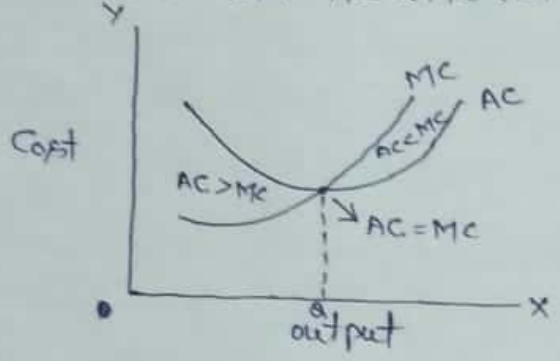

(AC को MC हमेशा AC के न्यूनतम बिन्दु पर नीचे से ऊपर को काटती है।)

10. AC तथा AVC का अन्तर AFC होता है जो उत्पादन वृद्धि के साथ-2 घटती जाती है।

11. दीर्घकालीन औसत लागत वक्र का प्रत्येक बिन्दु सम्बन्धित अल्पकालीन वक्र को उसके न्यूनतम बिन्दु पर स्पर्श नहीं करता केवल अनुकूलतम प्लाण्ट पर वह SAC के न्यूनतम बिन्दु पर उसे स्पर्श करता है, यही कारण है कि LAC अंग्रेजी अक्षर 'U' आकार का होता है।

12. LAC को लपेटने वाला वक्र अथवा लिफाफा वक्र (Envelope Curve) भी कहते है। इसके अतिरिक्त इस वक्र को नियोजन वक्र (Planning Curve) भी कहते हैं।

13.

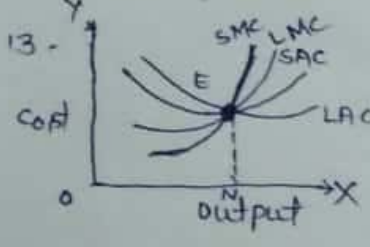

E बिन्दु पर →

$$LAC = LMC = SAC = SMC$$

(E बिन्दु LAC & SAC का न्यूनतम बिन्दु है।)

14. किसी फर्म का कुल आगम वस्तु की एक इकाई कीमत तथा कुल बिक्री की गई इकाइयों के गुणनफल द्वारा प्राप्त किया जाता है।

अर्थात्- कुल आगम = कुल बिक्री से प्राप्त राशि

$TR \rightarrow$ = बिक्री इकाइयाँ × प्रति इकाई कीमत

$(TR = P \times Q$ या $TR = AR \times Q)$

15. लाभ = आय - लागत।

16. AR सदैव वस्तु की प्रति इकाई कीमत को प्रदर्शित करता है।

$$AR = \frac{TR}{\text{output}} \quad \text{or} \quad AR = \frac{TR}{Q}$$

17. MR, TR में परिवर्तन की दर को बताता है अर्थात्

$$MR = \frac{\delta (TR)}{\delta (Q)} \quad \text{or} \quad MR = \frac{\Delta TR}{\Delta Q}$$

$$\boxed{MR_n = TR_n - TR_{n-1}}$$

18. श्रीमती जान राबिन्सन के अनुसार - $AR = MR\left[\frac{e}{e-1}\right]$

" " " " " (i) जब $e = 1$ तब MR शून्य होगा।

(ii) जब $e > 1$ तब MR धनात्मक होगा।

(iii) जब $e < 1$ तब MR ऋणात्मक होगा।

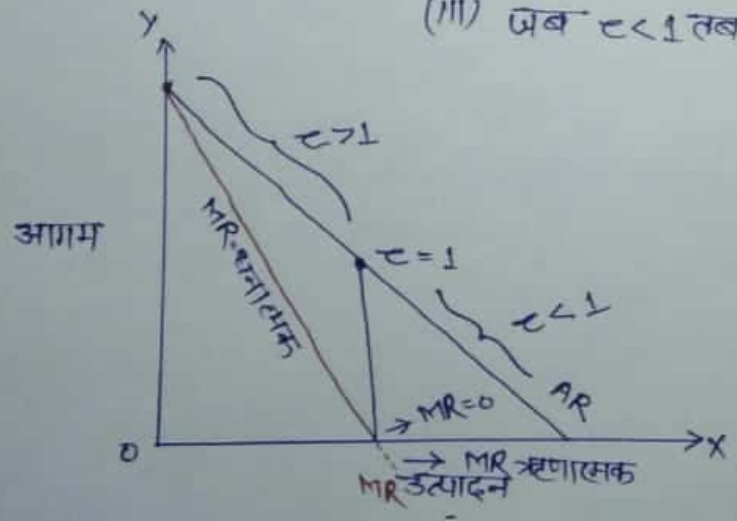

19- TR, AR & MR की स्थिति – (सम्बन्ध)

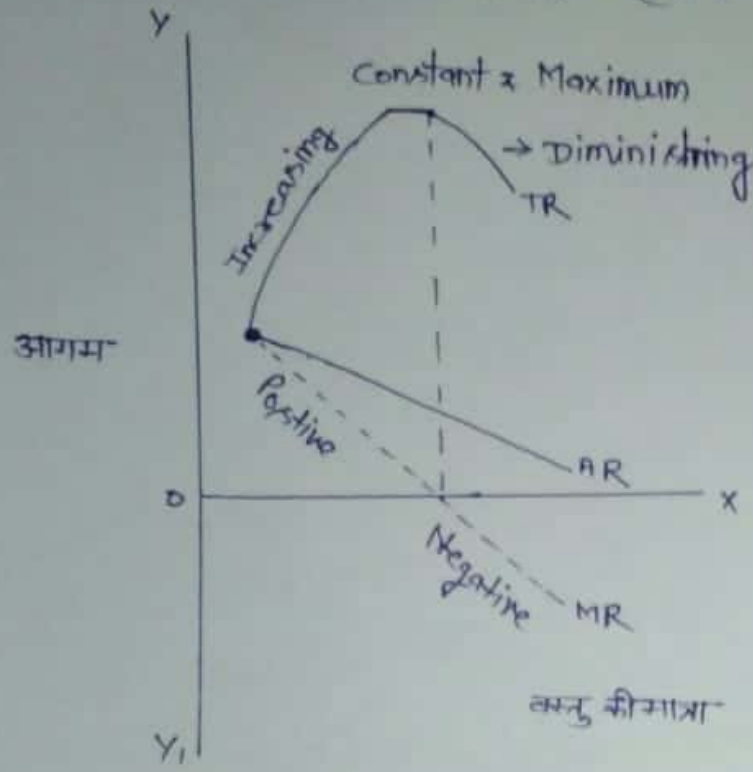

20 - विभिन्न बाजारों की दशा में सम्बन्ध या विभिन्न बाजारों में AR तथा MR वक्रों की तुलनात्मक स्थिति –

(i) पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition) –

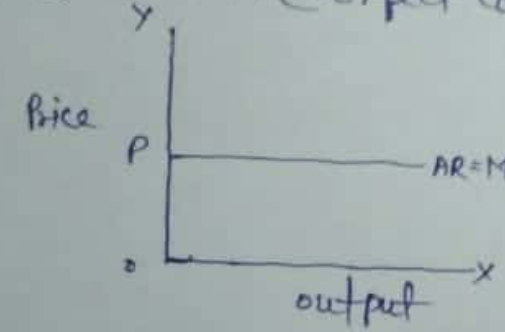

P = AR = MR

(ii) एकाधिकार (Monopoly) –

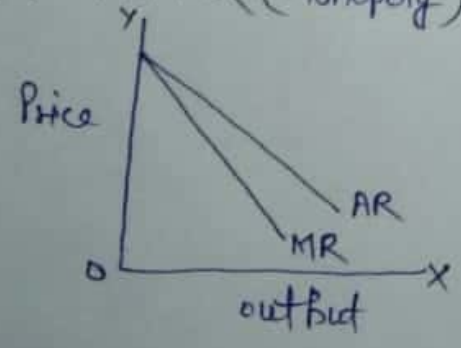

AR > MR

(iii) अपूर्ण प्रतियोगिता –

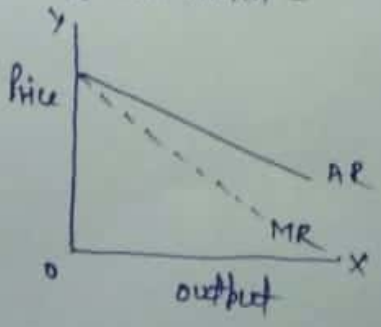

21- उत्पादन कर रही प्रत्येक फर्म का उद्देश्य होता है - अधिकतम लाभ कमाना।

22- फर्म के साम्य की दो रीतियाँ है — (i) TR एवम् TC वक्र रीति
(TR & TC Curve Approach)
(ii) MR एवम् MC वक्र रीति
(MR & MC Curve Approach)

(i) पूर्ण प्रतियोगिता -

i- TR & TC Approach -

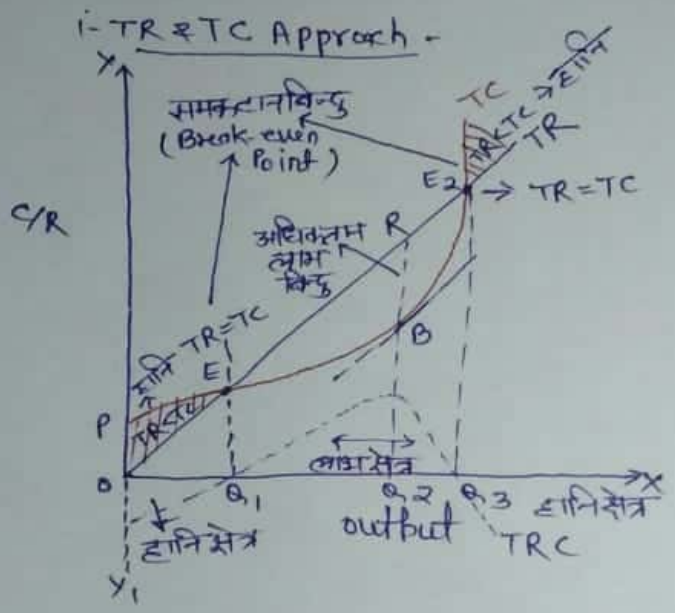

* Break-even Point → वह बिन्दु है जहाँ AR=TC के होगा ऐसी स्थिति में फर्म को न लाभ होता है न ही हानि।

* चित्र में फर्म का वास्तविक सन्तुलन बिन्दु E2 पर होगा।

ii - MR & MC Approach -

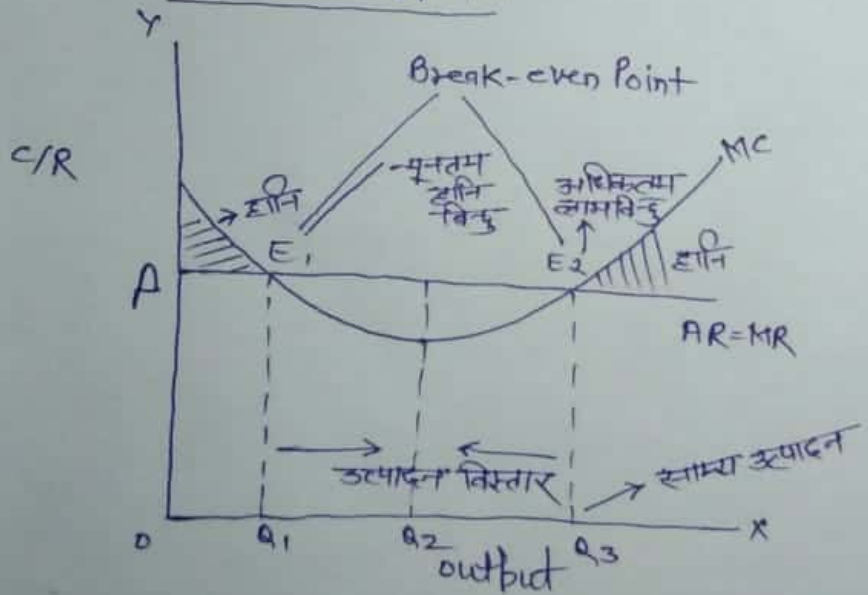

(ii) अपूर्ण प्रतियोगिता - (a) AR = TC Approach -

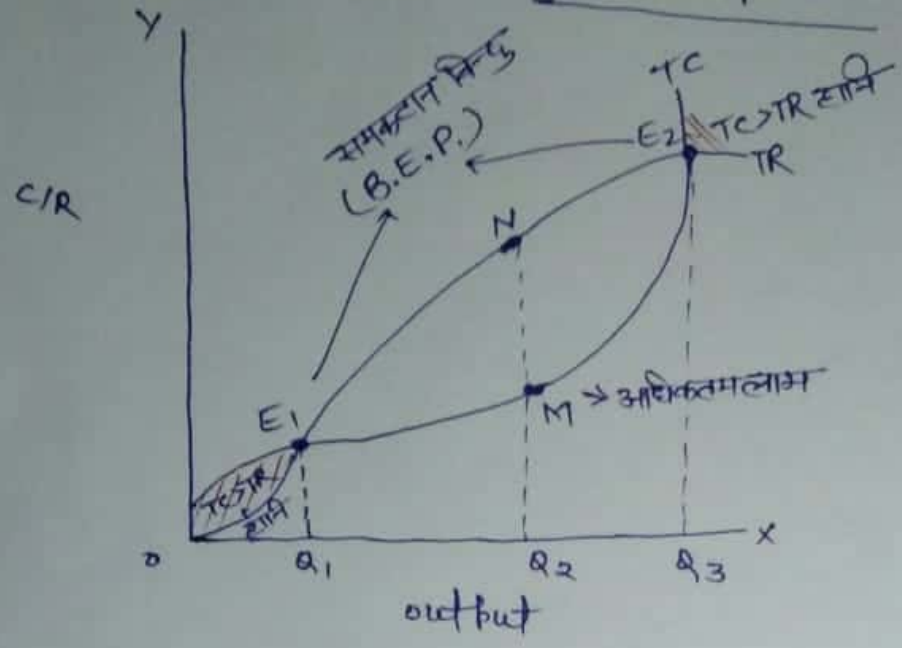

(b) MR = MC Approach -